अपने भाइयों को स्थिर कैसे करें (18:22, 23; 19:1)

पौलुस मसीह में अपने भाइयों से प्रेम करता था। तीसरी मिशनरी यात्रा के आरम्भ में, पौलुस ''एक ओर से गलतिया और फ्रूगिया में सब चेलों को स्थिर करता फिरा'' (प्रेरितों 18:23)। ''बपतिस्मा कब बपतिस्मा नहीं होता?'' पाठ में हमने ध्यान दिया था कि लूका ने ''1500 मील की यात्रा को जिसमें कई महीने लग गए थे, ... तीन आयतों में पूरा कर दिया।'' वे तीन आयतें दूसरे मसीहियों के साथ *हमारे* सम्बन्धों में सहायक हो सकती हैं, सो आइए कुछ पल के लिए उन्हें विशेष समय निकालकर देखते हैं।

उनके साथ समय बितायें (18:22, 23)

पौलुस अपने भाइयों के साथ समय बिताकर प्रसन्न होता था। अपनी दूसरी यात्रा के अन्त में वह एक बार फिर सीरिया के ''अन्ताकिया में'' (आयत 22) आया और ''कुछ दिन'' (आयत 23) वहां रहा। हो सकता है कि वह अन्ताकिया में सर्दी के मौसम में रहा हो, और उसने उस कलीसिया के साथ काम किया हो जो उसे उसके विश्वव्यापी मिशन में उत्साहित करती थी। बाद में, सम्भवत:, बसंत ऋतु में, जब सड़कें फिर से खुल जाती थीं, अपनी तीसरी यात्रा के लिए वह ''वहां से चला गया'' (आयत 23)।[1] वहां से जाते समय, बेशक उसके मन में अन्ताकिया में अपने भाइयों से मिलने की योजना होगी जैसा कि वह हर यात्रा के अन्त में करता था। उन्हें अलविदा कहते समय, उसे पता नहीं था कि वह उन्हें दोबारा कभी नहीं देखेगा।

जब भी आप किसी को ''अलविदा'' कहते हैं, तो याद रखें कि यह विदाई अन्तिम भी हो सकती है। यह सुनिश्चित किए बिना कभी भी किसी से जुदा न हों कि यदि आप उसे फिर कभी नहीं मिलते तो भी आपका सम्बन्ध बार-बार आपको याद आएगा।

हमें नहीं बताया गया कि इस यात्रा के आरम्भ में पौलुस के और भी साथी थे, परन्तु पौलुस कभी भी अपनी इच्छा से अकेला यात्रा नहीं करता था। बाद में लूका ने उल्लेख किया कि इफिसुस में तीमुथियुस था (19:22); शायद यह जवान प्रचारक कुरिन्थुस से

आया था[2] और पौलुस के साथ हो लिया था।[3] 2 कुरिन्थियों से भी हमें पता चलता है कि तीतुस इफिसुस में पौलुस के साथ ही था (2 कुरिन्थियों 2:13; 7:6, 13, 14; 8:6, 16, 23; 12:18); यह भी सम्भव है कि अन्ताकिया से जाने के समय तीतुस पौलुस के साथ था।[4]

आप जहां भी जाएं, उनसे मिलें (18:23)

पौलुस और उसके साथी (जो भी थे) अन्ताकिया से उसी मार्ग से गए जिससे दूसरी यात्रा के शुरू में पौलुस और सीलास गए थे (पृष्ठ 184 पर मानचित्र देखिए)।[5] वे दक्षिणी गलतिया के पठार तक पहुंचने के लिए किलिकिया के दर्रों से होते हुए ताउरस पहाड़ियों को पार करते हुए सीरिया से उत्तर और फिर पश्चिम की ओर गए होंगे। वे ''गलतिया और फ्रुगिया'' से होते हुए (प्रेरितों 18:23) एक बार फिर उन कलीसियाओं से मिलते हुए जो पहली यात्रा के समय स्थापित की गई थीं, आगे निकल गए। उनका मुख्य उद्देश्य यह देखना था कि मसीही लोगों का क्या हाल है, सो पौलुस और उसके साथियों ने ''सब चेलों को स्थिर'' करने के लिए वहां कुछ समय बिताया (आयत 23)।

एक बार फिर हमारी इच्छा है कि लूका यात्रा के इस भाग के बारे में जानकारी देता। यदि तीमुथियुस पौलुस के साथ था तो मैं लुस्त्रा में उसकी माता के साथ उसके अश्रुपूर्ण मिलन की कल्पना कर सकता हूं। (सम्भवत: वह उसे अभी भी जीवित देखकर अचम्भित रह गई थी।)

पौलुस ने प्रभु की कलीसिया को मिलाने के अवसर को कभी भी नजरअन्दाज़ नहीं किया और हमें भी नहीं करना चाहिए।

उनकी सहायता करें (18:22, 23)

पौलुस की तीसरी यात्रा का उद्देश्य लूका के दबाव के कारण नहीं,[6] बल्कि यह तो इस यात्रा के दौरान लिखे पौलुस के पत्रों से ही स्पष्ट था: वह ''पवित्र लोगों के कंगालों के लिए कुछ चन्दा'' (रोमियों 15:26) इकट्ठा कर रहा था। इसके लिए गलतिया से जाते हुए, उसने ''गलतिया की कलीसियाओं को ... सप्ताह के पहिले दिन'' चन्दा इकट्ठा करने के निर्देश दिए (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)। उसने सम्भवत: उस क्षेत्र के चुने हुए लोगों द्वारा चन्दा पूरा करने और उस चन्दे को बाद में यरूशलेम में देने का प्रबन्ध भी कर लिया था (1 कुरिन्थियों 16:3, 4; प्रेरितों 20:4)।[7]

पौलुस हमेशा अपने से ज्यादा अपने भाइयों की चिन्ता करता था। क्या हम भी अपने भाइयों की चिन्ता करते हैं?

उनके साथ किया अपना वचन निभायें (18:21; 19:1)

गलतिया और फ्रूगिया में अपना काम पूरा करने के बाद, पौलुस और उसके साथी

पश्चिम में इफिसुस की ओर निकल पड़े। पौलुस ने इफिसुस में यहूदियों से वायदा किया था कि वह उनके पास आने का प्रयास करेगा (18:21), और वह अपना वचन पूरा कर रहा था। ये यहूदी इब्राहीम में पौलुस के भाई थे, और उसे उन्हें मसीह में अपने भाई बनाने की उम्मीद थी।

किसी सम्बन्ध को तब तक कोई नहीं बिगाड़ सकता जब तक उस सम्बन्ध में एक पक्ष अविश्वासी न हो जाए। आइए हम वचन निभाने वाले लोग बन जाएं!

सारांश

इस कारण ''जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था,[8] तो पौलुस ऊपर से सारे देश से होकर[9] इफिसुस में आया'' (19:1क)। पौलुस अपने भाइयों के बारे में स्पष्ट विवेक के साथ इफिसुस में आया। जो कुछ भी उनकी सहायता व उत्साह के लिए वह कर सकता था, उसने किया। मुझे उम्मीद है कि जीवन में *हम* कहीं भी क्यों न पहुंच जाएं, हम यही बात कह सकते हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]सम्भवत: वह 52 ई. के पतझड़ या 53 ई. के बसंत में गया। [2]लूका ने यह उल्लेख नहीं किया कि सीलास या तीमुथियुस पौलुस के साथ कुरिन्थुस से गए थे (18:18), इसलिए हम ने पिछले एक पाठ में सुझाव दिया था कि हो सकता है कि पौलुस ने कुरिन्थुस में काम जारी रखने के लिए उन्हें वहां छोड़ दिया हो। [3]कुछ और सम्भावनाएं हैं: तीमुथियुस अपनी मां से मिलने कुरिन्थुस से लुस्त्रा में, या पौलुस के इफिसुस में पहुंचने के बाद कुरिन्थुस से इफिसुस में जहाज़ से गया होगा। [4]प्रेरितों के काम पुस्तक के भेदों में एक यह भी है कि लूका ने कभी तीतुस का उल्लेख क्यों नहीं किया। एक सम्भावित व्याख्या यह है कि तीतुस लूका का रिश्तेदार था। बाइबल से बाहर की एक परम्परा के अनुसार, लूका की तरह, तीतुस भी सूरिया के अन्ताकिया से था (देखिये गलतियों 1:21; 2:1) और उसके लिए इस यात्रा में पौलुस के साथ जाना स्वाभाविक होगा। [5]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 151 के मानचित्र के साथ इस भाग के पृष्ठ 184 पर मानचित्र की तुलना की थी। [6]इस यात्रा में विशेष चंदा लिए जाने का लूका ने केवल प्रेरितों 24:17 में एक हवाला दिया है। [7]सोपत्रुस और गयुस, जो दोनों दिरबे से थे, बाद में इस परोपकारी मिशन पर पौलुस के साथ गए (20:4)। लुस्त्रा का प्रतिनिधित्व करने के लिए, तीमुथियुस भी आया (20:4)। [8]अपुल्लोस की कहानी के लिए, ''एक प्रचारक जिसकी प्रशन्सा किए बिना मैं नहीं रह सकता'' पाठ देखिये। कुछ देर तक इफिसुस में काम करने के बाद, अपुल्लोस कुरिन्थुस में चला गया था (18:27)। [9]इससे संकेत मिलता है कि पौलुस ने इफिसुस में जाने के लिए प्रचलित व्यापारिक मार्ग नहीं पकड़ा, परन्तु इसके स्थान पर वह उस मार्ग से होकर आया जो उत्तर से होकर इफिसुस में जाता था और बहुत कम लोग उधर से जाते थे।